



FuturePointIndia.com

(फ्यूचर पॉइंट द्वारा रचित)

Leo Palm

संस्करण: अंग्रेजी | हिन्दी

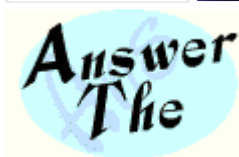
मंगलवार, अगस्त 21, 2012

मुखपृष्ठ | आपके विचार | हमसे मिलिए

चैनल

- राशिफल
- ? ज्योतिष संस्था *नया*
- ? ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट ढूँढिए



आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं

[पिछले माह के परिणाम](#)

जैन धर्म और वास्तु

डॉ. घनश्याम ठाकुर, इंदौर

भूवैज्ञानिकों के अनुसार भूमिगत सतहों में हलचल होने से भूकंप आते हैं। भूकंप की भविष्यवाणी करने का कोई कारगर उपकरण अभी तक विकसित नहीं हो पाया है।

घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में हो फर्श समतल हो। पूर्व में ऊंचाई होने पर धन हानि, दक्षिण ऊंची है, तो समृद्धि, पश्चिम ऊंची होने पर श्री वृद्धि, उत्तर में ऊंचाई हो, तो बरबादी होने की संभावना रहती है।

वास्तु विज्ञान में पूर्व दिशा का विशेष महत्व है। उसमें आग्नेय कोण का महत्व और भी अधिक है। पूर्व दिशा आग्नेय और ईशान कोण के मध्य में है। ये चारों दिशाएं निश्चित रहती हैं, जबकि सूर्य दिक्षणायन-उत्तरायण होता है। इस कारण अनेक मंदिर दक्षिण दिशा में निर्मित हो गये। ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक कार्य के मुहूर्त निश्चित हैं। उत्तरायण सूर्य में बिंब प्रतिष्ठा आदि मांगलिक कार्य होते हैं। परंतु वर्तमान में अधिक मास, मल मास, गुरु-शुक्र अस्त में मांगलिक कार्य वर्जित हैं। किंतु आजकल यह माना नहीं जा रहा, तो इसका परिणाम भी व्यक्ति भोग रहा है।

भौतिक सुरक्षा हेतु ग्रह एवं आध्यात्मिक शांति के लिए मंदिर आदि की निर्णय कला ही वास्तु विद्या है। अदशागी जिनवाणी में बारहवें अंग के अंतर्गत चौदह पूर्वों में 'कियाविशाल' नामक एक पूर्व है, जिसमें नौ करोड़ पदों द्वारा बहत्तर कलाओं और चौंसठ विद्याओं का वर्णन है। इन्हीं कलाओं एवं विद्याओं में शिल्प कला एवं वास्तु विद्या के नाम से भवन निर्माण की शास्त्रीय एवं मांगलिक विधि का परिचय दिया गया है।

आचार्य भट्ट अकलक देव 'तत्त्वार्थ राजवार्तिक' आचार्य वीरसेन स्वामी ने धवलाटीका, आचार्य यतिवृषभ ने कसायपाहुड़, आचार्य नेमिचंद्र ने गोमट सार जीवकांड आदि में चौदह पूर्वों का वर्णन किया। उसमें, तेरहवें पूर्व के रूप में, कियाविशाल नामक पूर्व का वर्णन है।

बहत्तर कलाओं में पैतालीसवीं कला का नाम 'वत्थुमाण' या वत्थुविज्जा है। भारतीय परंपरा में वास्तु विद्या सैंतीसवीं कला मानी गयी है।

हला युधकोश में कहा है—

If you are not able to view the page properly then [Download Hindi Font.](#)

पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी

.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



- हमारी साइट को अपने Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित लियो गोल्ड, विंडो पर आधारित जन सामान्य के प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है। और

‘वास्तु संक्षेपतो वक्ष्यो गृहादौ विघ्ननाशनम्’

अर्थात्, घर आदि में विघ्नों का निवारण करने वाली विद्या या कला विशेष ही वास्तु विद्या है।

जैन वास्तु शास्त्र में ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) का भी विशेष महत्व है। लोक दृष्टि से उत्तर-पूर्व दिशा ईशान कोण को पूज्य माना गया है।

वास्तु विद्या में कुछ चक्रों का विधान है, जिनमें ज्योतिष और ज्यामिति की प्रमुखता है। ये वत्स चक्र, वास्तु पुरुष चक्र, शेषनाग चक्र, वृष चक्र आदि हैं।

वत्स चक्र द्वारा मुहूर्त का ज्ञान किया जाता है। जब सूर्य कन्या, तुला, वृश्चिक राशि में हो, तो वत्स का मुख पूर्व दिशा में होगा। सूर्य धनु, मकर, कुंभ में हो, तो वत्स का मुख दक्षिण दिशा में, जब मीन, मेष, वृषभ में सूर्य होता है, तब पश्चिम दिशा एवं सूर्य जब मिथुन, कर्क और सिंह राशि में स्थित हो, तो उत्तर दिशा में रहता है। जिस दिशा में वत्स का मुख हो, उस दिशा में नींव खुदाई, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्यों का निषेध है। वत्स का मुख प्रत्येक दिशा में तीन माह रहता है।

घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में हो। फर्श समतल हो। पूर्व में ऊंचाई होने पर धन हानि, दक्षिण ऊंची है, तो समृद्धि, पश्चिम ऊंची होने पर श्री वृद्धि, उत्तर में ऊंचाई हो, तो बरबादी होने की संभावना रहती है।

घर के सामने अरिहत जिनदेव की दृष्टि या दायां भाग हो, तो कल्याण होगा। यदि पीठ है, तो हानिकारक है। घर के पास, या घर में केला, नींबू, अनार, आक, इमली, बबूल, पीले फूल, कांटेदार वृक्ष नहीं होने चाहिए। ये हानिकारक हैं। यदि पेड़ लगाना हो, तो शमी, शाल, अशोक, रीठा, कटहल के पेड़ लगाएं, जिनसे समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। घर से बाहर निकलते वक्त सामने कोई पेड़ न हो।

घर का मध्य भाग हमेशा खाली रखें।

दुकान या कार्यालय का मुख यथासंभव उत्तर की ओर हो।

समरांगण सूत्रधार में लिखा है कि सिंह द्वार और मुख्य द्वार की दिशा एक ही हो। मुख्य द्वार पर कलश का अंकन शुभकारी है।

शौचालय दक्षिण-पश्चिम में हो। ट्यूब वेल पूर्व-उत्तर में दीवार और फाटक से थोड़ी दूरी पर होना चाहिए।

उत्तर पश्चिम में ऊपर की टंकी बनानी चाहिए।

गोल कोने वाला मकान रहने के लिए अनिष्टकारक है।

बहुमंजिले भवन के भूखंड की ढलान उत्तर-पूर्व में हो। दक्षिण-पश्चिम में क्षेत्र के तल की ऊंचाई अधिक हो। ट्यूब वेल उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में बनाया जाए। छत की टंकी वायव्य कोण में हो। बरामदा



लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भंडार आदि दक्षिण-पश्चिम में हो। सीढ़ियां पश्चिम में बनाएं। रसोई घर दक्षिण-पूर्व या उत्तर-पश्चिम में हो। वाहन ठहराने का स्थान उत्तर-पूर्व में रहना चाहिए।

औद्योगिक भवन, संस्थान का प्रवेश द्वार उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या पूर्व में हो। दक्षिण-पश्चिमी भाग ऊंचा होना चाहिए। मुख्य कार्यालय का मध्य उत्तर या पूर्व दिशा में होना चाहिए। बिजली का कमरा या स्थान दक्षिण, दक्षिण-पूर्व में होना चाहिए। सुरक्षा कर्मियों के लिए स्थान उत्तर-पश्चिम में बनाएं। शौचालय नैऋत्य कोण में होना चाहिए। ट्यूब वेल उत्तर-पूर्व में हो। वाहनों की पार्किंग उत्तर-पश्चिम में होनी चाहिए। भारी मशीनरी दक्षिण-पश्चिम में होनी चाहिए। आग संबंधी समस्त कार्य दक्षिण-पूर्व में करें। कच्चा माल दक्षिण-पश्चिम एवं बना हुआ माल उत्तर-पश्चिम में रखें। निकासी उत्तर-पूर्व की ओर होनी चाहिए।

मंदिर जिनायतन, चैत्यालय वह स्थान है, जिसे देव गृह कह सकते हैं। मंदिर की नींव का गड़ढा अधिक गहरा होना चाहिए। जिस दिशा में सूर्य हो, उस कोण में विनायक यंत्र स्थापित कर पूजन करें। कलश आदि स्थापित करें।

गड्ढे को ठोस रूप से भरें। चौकी निर्माण करें। एक से पांच स्तर बनाएं, जिसे थर या प्रतस्तर-गल कहते हैं।

मंदिर के मुख्य अंग कोण, प्रतिरथ, रथ भद्र ओर मुख भद्र हैं। उनके अलंकार तत्व नदी, पल्लव, तिलक, तवंग आदि हैं। मंडोवर के तेरह अंग हैं और चार भेद बताये गये हैं।

शिखर : शिखर के चार भाग हैं : शिखर, शिखा, शिखांत और शिखा मार्ग। कलश शिखर का सबसे ऊपर का भाग है, जिसके अंग हैं गल, कर्णिका, बीजपूरक। शकुनासा शिखर का अगला भाग है। शिखर के ऊपरी भाग पर दंड सहित ध्वज लगाना चाहिए।

जीर्णोद्धार करते समय भवन के वास्तविक स्वरूप को खंडित न करें। नाप-तोल, अंकन छवि आदि में बदलाव न हो, तो उसे ही सही जीर्णोद्धार कहते हैं।

सूर्य की राशि तालिका

कोण	अग्नि	ईशान	वायव्य	नैऋत्य
गृहारंभ	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चिक, धनु, मकर	वृषभ, मिथुन, कर्क	कुंभ, मीन, मेष
देवालय	मीन, मेष, वृश्चिक	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृषभ	धनु, मकर, कुंभ
जलाशय	मकर, कुंभ, मिथुन	मेष, वृश्चिक, मीन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चिक, धनु

श्री शिव और श्री राम नाम

एक दिन पार्वती जी ने महादेव जी से प्रश्न किया : 'आप हर समय क्या जपते रहते हैं?'

उत्तर में महादेव जी के श्री मुख से निकला : 'विष्णु सहस्र नाम' ।

पार्वती जी ने शंका व्यक्त की :

'ये तो एक हजार नाम है। सामान्य मनुष्य के लिए तो यह सब संभव भी नहीं होगा। क्या कोई ऐसा नाम भी है, जो सहस्रों नामों के बराबर हो और बस वही एक नाम जपा जाए?

भोले मंद-मंद मुस्करा कर बोले :

'राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनामतत्तुल्यं रामनाम वरानने ।

राम राम शुभ नाम रति, सबखन आनंद धाम ।

सहस्र नाम के तुल्य है, राम नाम शुभ नाम ।

महादेव पुनः बोले—

'मुमूर्षोमणिकर्ष्या तु अधोदकनिवसिनः । अहं ददामि ते मंत्र तारक
ब्रह्मदायकम्, अर्थात्, मरने के समय मणिकर्णिका घाट पर जिस मनुष्य
का शरीर गंगा जल में पड़ा होता है, उसको मैं आपका तारक मंत्र दे
देता हूँ, जिससे वह ब्रह्म में लीन हो जाता है ।

—गोपाल राजू, रुड़की

FuturePointIndia.com के बारे में | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

[ऊपर](#)

[पयूचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट](#)